International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 142-146
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 18-07-2026
Accepted: 13-08-2026
Publish : 14-08-2026

हेमलता त्रिवेदी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
पी.पी.एन.कालेज,
छत्रपति शाहू जी महा.वि.वि.,
कानपुर (उ. प्र.)

प्रो. मीना गुप्ता
विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग,
पी.पी.एन.कालेज,
छत्रपति शाहू जी महा.वि.वि.,
कानपुर (उ. प्र.)

Correspondence:
हेमलता त्रिवेदी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
पी.पी.एन.कालेज,
छत्रपति शाहू जी महा.वि.वि.,
कानपुर (उ. प्र.)

धार्मिकता के ब्याज से गंगा की स्वच्छता का संकल्प

हेमलता त्रिवेदी, प्रो. मीना गुप्ता

सारांश-

नमामि गंगे तव पादपंकजं,
सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरुपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं,
भावानुसारेण सदा नराणाम।।

अर्थात हे गंगा मैया! मैं आपके चरण कमल की वंदना करती हूं जिन दिव्य चरणों को देव दानव सभी पूजते है।आप सदा ही मनुष्यों को उनके भावनानुसार ऐहिक सुखभोग तथा पारलौकिक मोक्ष प्रदान करती है।

भारतीय मनीषियों की विचारधारा में भगवती गंगा के प्रति राष्ट्र एवं समाज के हृदय स्थल में इतनी गहरी आस्था ज्ञात होती है। एक ओर अनेक धाराओं का संगम भारतीय एकता को पुष्ट करता है तो दूसरी ओर इस त्रिवेणी तट पर अनेक भारतीय संस्कृतियों का संगम राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का संवाहक है। मानव कर्मयोग में लगे, भक्ति की धारा से स्नान, ज्ञान मार्ग का अवलंबन करने वाले विद्वत जन, सिद्धयोगी और मुनि त्रिवेणी के तट पर धर्म का उपदेश देते हैं।

जैसा कि सभी विद्वतजन को अवगत हैं कि स्वर्धुनि निरंतर कारखानों से निकलने वाले कूड़े-कचरे से भरे हुए धन से पूर्ण किन्तु शोभाहीन कर्णपुर (कानपुर शहर) को देखकर बड़ा दुरूख होता है। किसी से अपनी पीड़ा कहने में असमर्थ गंगा अपने ही पुत्रों के पापों को ढोती हुई बड़ी लज्जित एवं दुरूखी है। रासायनिक द्रवों से व्याकुल होकर एवं चमड़े के गंध के प्रदूषण से तथा जानलेवा होकर मानों अपने हृदय की मार्मिक वेदना को तीर्थराज प्रयाग से कहने के लिए वह आगे चल पड़ती है।

कूट शब्द -

धार्मिकता, गंगा, भारतीयता, प्रदूषण, शुद्धिकरण, सभ्यता एवं संस्कृति,राष्ट्रीयता, हिन्दू ,परंपरा, सांस्कृतिक, विरासत, पवित्रता, संस्कृति, श्रेष्ठता, अमृतमय, संकल्प, तपस्थली, चरणामृत, भारतीयता, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक,अमृतवाहिनी, जनमानस, पतित पावनी, सामाजिक चेतना, परम्परागत आदि।

प्रस्तावना-

एषां भूतानां पृथिवी रसरू पृथिव्या आपो रसोऽयामषधयो रसरू।। (छान्दोग्योपनिषद्)१ध्१ध्२

अर्थात् इन चराचर प्राणियों का पृथिवी रस, उत्पत्ति स्थिति एवं लय का स्थान है।जो जल है वह पृथ्वी का रस है और जल का रस औषधियां है क्योंकि जल औषधियों का ही आज परिणाम है। हिमालय में जल विभिन्न जड़ी बूटियों में समाकर फैलता है इसलिए औषधियुक्त जल ही गंगा जल है।

भगवती गंगा जी की महिमा इतनी

भजगोविन्दम् में भगवती गंगा का महात्म्य बताते हुए कहा है कि -

भगवद्गीता किञ्चिदधीता गंगाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यमरू किं कुरुतेचर्चाम्।।

अर्थात् शंकराचार्य जी की उपर्युक्त श्लोक से यह आशय है कि गंगा जल की एक बूंद भी पी ली जाए तो यमयातना से मुक्ति मिल जाती है।ऐसी मान्यता है कि हिन्दू समाज में कोई व्यक्ति मरणासन्न हो जाता है

तब उसकी श्वास,वेदनासूचक घर्घराहट उत्पन्न हो जाती है। यदि उस समय गंगा जल तथा तुलसी पत्र उसके मुख में डाल दिया जाता है।तब चमत्कारी लाभ देखने को मिलता है। गंगा जल के प्रभाव से सहज होकर स्वाभाविक रूप से वह कष्टमुक्त होकर महाप्रयाण करता है।

पृथ्वी,जल, अग्नि, वायु, आकाश इन पंचमहाभूतों से सृष्टि की उत्पत्ति हुई। इसमें पृथ्वी और जल मुख्य है।इस तन्मात्रा का परिगमन ही जल है। भारत में जल को जीवन का सर्वस्व आधार तथा सर्वकल्याणमयी होने के कारण गंगा जल को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। वैदिक काल में ही ऋषियों ने जल तत्व को सभी कामनाओं का पूरक तथा ब्रह्म के सदृश स्वीकार किया है। जैसा कि छान्दोग्योपनिषद् -

स योऽपो ब्रह्तेत्युपास्त आप्नोति सर्वान कामान्।

(छान्दोग्योपनिषद् ६/१०/२)

प्रत्येक क्रांति का नेतृत्व कोई युवक ही करता है। काशीवासी युवा कवि श्री अनुराग तिवारी ने ष्गंगा केवल नदी नहीं है,

शीर्षक कविता लिखकर हिंदी काव्य गंगा में स्नान करने वाले प्रबुद्ध वर्ग के मन में एक तरंग तथा गंगा बचाओ अभियान में जुटे सम्पूर्ण भारतीयों के मन में उत्साह और उमंग ला दिया है।निरूसंदेह कवि की यह काव्य-क्रान्ति, वैसे भारतीयों की भ्रान्ति दूर करेगी।जो गंगा मैया के अस्तित्व को मिटाकर भी अपनी सुख-समृद्धि के सपने देख रहे हैं।कवि ऐसे लोगों को सावधान करते हुए कहता है कि -

श्रीहरि के चरणों का अमृत,
गंगा केवल नदी नहीं है।
सदियों से बहती संस्कृति है,
केवल जल की धार नहीं है।।
ध्यान रहे यदि इस धरती पर,
गंगा नहीं रहेगी।
जन-जीवन नहीं बचेगा,
धर्म संस्कृति नहीं रहेगी।
हे! पाप नाशिनी गंगा माँ,
दो जन को सुविचार।
विचलित और शर्मिन्दा हूं,
मैं तेरी दशा निहार।।

गंगा की स्वच्छता की अवधारणा-

भारतीय ज्ञान परंपरा में हमारे मनीषियों ने देव नदी गंगा को विशुद्ध करने का वैज्ञानिक मार्ग भी ज्ञात कर लिया था। उन्होंने गंगा के शुद्धिकरण हेतु जो मां गंगा के पूजन की प्रविधि अपनाई। उसमें पुष्प,पत्र, मुद्रा आदि के माध्यम से माँ गंगा के अभिसिञ्चन का प्रविधि रखा।इसका वैज्ञानिक पहलू यह है कि प्राचीन भारतीय मुद्राएं- स्वर्ण,रजत, कांस्य,तांम्र आदि धातुओं से बनी होती थी।तांम्र, कांस्य, स्वर्ण,रजत आदि धातुएं जल को विशुद्ध करने का कार्य करती है। देवनदी मां गंगा के पूजन में पुष्प - पत्र के साथ-साथ मुद्रा अर्पण की यह प्रविधि मां गंगा के शुद्धिकरण करने का कार्य प्राचीन काल से चलता रहा। वर्तमान समय में सरकार ने अपनी मौद्रिक नीति को परिवर्तित कर दिया।अब भारतीय मुद्राएं स्वर्ण, रजत,तांम्र, कांस्य आदि की नहीं निर्मित हो रही है। वर्तमान में वह लौह,निकिल आदि धातुओं की बनने लगी है।माँ गंगा के प्राचीन पूजन परंपरा विधि में आज भी मुद्रा अर्पण की परंपरा चली आ रही है। लौह,निकिल आदि धातुओं से निर्मित मुद्राएं माँ गंगा के जल को प्रदूषण से बचाने के बजाय उसके अस्तित्व पर ही संकट खड़ा कर दिया है। इसके प्रति जन जागरुकता को व्यापक स्तर पर प्रचार- प्रसार की महती आवश्यकता है।

इसका द्वितीय पक्ष यह है कि जो वर्तमान में मुद्राएं गंगा में विसर्जित करने से विलीन हो जाती है।वह हमारी भारतीय अर्थव्यवस्था को कमजोर करने का कार्य करती है। साथ ही साथ गंगा जल के प्रदूषण को आधुनिक मुद्राएं और प्रदूषण बढ़ाने का कार्य भी कर रही हैं। अतः इस पर जन जागरुकता को बढ़ाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

जैसे शीतकाल में स्वाभाविक ही शीत लगता है। वैसे ही गंगा से स्वाभाविक ही पापों का नाश तथा स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पापानां पापहन्तृत्वं स्वर्गमोक्षैकहेतुता।
स्वभाव एवं गंगायारू शैत्ये शीतरुचिर्यथा।।

गंगा के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व के प्रमुख बिंदु इस प्रकार है - पापों का नाश, सनातन धर्म के अनुसार मां भगवती गंगा का जल इतना पवित्र और स्वच्छ है कि इसमें डूबकी लगाने मात्र से व्यक्ति के इस जन्म तथा पूर्व जन्मों के नकारात्मक कर्म और पाप नष्ट हो जाते है।मोक्ष की प्राप्ति हिन्दू परंपरा में मृत्यु के बाद अस्थियों का विसर्जन गंगा में किया जाता है। यह मान्यता है कि गंगा जल के स्पर्श मात्र से मृत आत्मा को सद्गति और मोक्ष मिलता है। जैसा कि तीर्थ स्थल गंगा के तट पर अवस्थित कई शहरों जैसे हरिद्वार, वाराणसी और प्रयागराज हिन्दू धर्म में सर्वोच्च तीर्थ स्थल माने जाते है। यहां स्नान करने और दान-पुण्य करने का विशेष ही फल मिलता है। त्यौहार और अनुष्ठानों, जन्म से लेकर मृत्यु तक के अधिकांश संस्कारों में गंगा जल का अनिवार्य रुप से उपयोग किया जाता है। गंगा दशहरा और कुंभ जैसे विशाल मेलें गंगा के तटों पर ही आयोजित किए जाते हैं। गंगा जल से मानव को जीवन दान ही नहीं मुक्ति भी देती है।

गंगा का धार्मिक महत्व-

पुराणों के अनुसार देव -दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन से निकले हलाहल (विष) से सृष्टि को बचाने के लिए देवाधिदेव महादेव ने उस विष को अपने कंठ में समाहित कर ष्नीलकंठष् कहलाए।इस विष की ज्वाला को शांत करने के लिए आज भी भगवान शिव पर जल चढ़ाने की परंपरा विद्यमान है। शास्त्रों में मां भगवती गंगा को मोक्षदायिनी एवं पापनाशिनी माना गया है।

स्वच्छता की दृष्टि से अन्य ग्रन्थों से मूल्यांकन महाभारत में गंगा को सर्वश्रेष्ठ तीर्थ बतलाया गया है। गंगा जल का धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व यह है कि गंगा अपने उद्गम स्थल से निकल कर विभिन्न पर्वतीय क्षेत्रों को स्पर्श करती हुई भारत के मैदानी भागों में प्रवाहित होती है। पर्वतीय क्षेत्रों में पाये जाने वाले अत्यंत दुर्लभ प्रजाति के औषधीय गुण वाले वनस्पतियों के इसके जल में मिश्रित होकर गंगा के जल को दिव्य एवं अतुलनीय बनाती है।जो आज के वैज्ञानिक अनुसंधानों ने सिद्ध कर दिया है कि गंगा जल का धार्मिक महत्व ही नहीं अपितु वैज्ञानिक महत्व भी है। वैज्ञानिक यह मानते हैं कि गंगा जल में कुछ ऐसे जीव होते है जो जल को प्रदूषित करने वाले विषाणुओं को नष्ट कर देते है। गंगा जल में बैक्टीरियोफेज पाया जाता है।जो हानिकारक सुक्ष्म जीवों को जीवित नहीं रहने देते है। गंगा की असीमित शुद्धिकरण क्षमता और सामाजिक, धार्मिक श्रद्धा के बावजूद इसके प्रदूषण को रोकने का हम सभी को हर संभव प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार वैज्ञानिक तथ्यों से भी इस बात को बल प्राप्त होता है कि देवनदी मां गंगा का जल पवित्र और चमत्कारी है।मानव शरीर पंचतत्वों से निर्मित है। पंचतत्वों में जीवन के विकास के लिए जल एक अनिवार्य तत्व है। इसीलिए ऋषि मुनियों ने जल की पवित्रता और संरक्षण को महत्वपूर्ण माना है। विश्व की समस्त सभ्यताएं एवं संस्कृतियां नदियों के किनारे ही विकसित हुई है। जिनमें नील नदी के किनारे मिस्र की सभ्यता,दजला और फरात नदियों के किनारे विश्व की सबसे प्राचीन मेसोपोटामिया की सभ्यता एवं संस्कृति, चीन में ह्वाग्हो की सी क्यांग नदी के किनारे चीन की सभ्यता एवं संस्कृति, भारत में सिन्धु नदी के किनारे सप्तसैन्धव सभ्यता एवं संस्कृति जो परवर्ती काल में भारत के विशाल मैदानी भाग के गंगा एवं यमुना नदी की तलहटी में विशाल वैदिक संस्कृति का विकास हुआ। जिसमें वेद, उपनिषद,पुराण, आख्यान, रामायण, महाभारत, रघुवंश महाकाव्यम्, मेघदूतम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् आदि महान ग्रंथों की रचना की गई।

कीरति भनिति भूत भलि होई।
सुरसरि सम सब कह हित होई।।

"रामचरित मानस (बालकाण्ड)"

गोस्वामी तुलसीदास जी इस पंक्ति के माध्यम से बताना चाहते है कि किसी व्यक्ति का यश उसकी वाणी और संपत्ति तभी तक सार्थक और अच्छी है।जब तक वे दूसरों के कल्याण (भलाई) में काम आये। जिस प्रकार मां गंगे हर किसी को पवित्र करती है। किसी के साथ कोई पक्षपात नहीं करती। उसी प्रकार मनुष्य की सफलता एवं धन जन हितैषी होना चाहिए। जिस प्रकार मां गंगा का जल।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने वन गमन प्रसंग में गंगा के संबंध में बड़ा ही सुन्दर सरस वर्णन किया है कि -

जय गंगे आनंद तरंगें कलरवे।
अमल अंचले पुण्य जले दिवसंभवे।।
सरस रहें यह भारतभूमि तुमसे सदा।
हम सबकी तुम एक चलाचल संपदा।।

कवियित्री के "रक्षतगंगाम्" महाकाव्य में स्वच्छता का संकल्प-

कवयित्री प्रोफेसर कमला पाण्डेय द्वारा विरचित "रक्षतगंगाम्" महाकाव्य में गंगा जल के आचमन करने से पवित्र भक्त स्वर्ग लोक को प्राप्त करते थे,वही आज साबुन के झाग और थूक से युक्त हो गया है।वह जल आज कैसे पीया जाय कैसे छोड़ा जाय।जो अपने पूर्वजों के उद्धार की कामना से राजर्षि भागीरथ के द्वारा मां गंगा पृथ्वी पर लायी गई।जो पतित पावनी मां गंगा स्तुतियों, मांगलिक वचनों से,गंध, अक्षत, पुष्पमाला आदि सुन्दर प्रदीपों से पूजी जाने योग्य है।उसी के तट पर नहाने वाले जन उसके जल को मैला कर रहे है।

दिव्यलोको यदाचम्य मोदान्वितैरू;
प्राप्यते गांगाभक्तैरू पवित्रैश्चिरम्।
फेनिलैरू वृद्धि निषठीवनैर्मिश्रतं
पीयतां वा कथं हीयतां वा कर्म।।

रक्षतगंगाम् (दशमसर्ग६श्लोक)

कवयित्री ने अपने महाकाव्य में गंगा जल को दूषित एवं प्लास्टिक का प्रयोग जीवनचर्या में भूयशरू हो रहा है क्योंकि उसका पृथ्वी में विलय शताब्दियों तक नहीं हो सकता। अधिकांशतः वह कूड़े-कचरे के रूप में प्रदूषण को बढ़ाता है। आज का मानव सिंथेटिक पदार्थों का प्रयोग प्रतिदिन बहुत तेजी से कर रहा है और वह आत्मनाश को बढ़ावा दे रहा है।

जीवने गृह्यमाणाऽधुना भूयशरू
प्लास्टिकेति प्रसिद्धा नवा निर्मितारू
इषणोत्पादिका याऽवसाने लयं
नो समीयात् पृथिव्यां शताब्दीमपि।।१।

रक्षतगंगाम् (दशमसर्ग११श्लोक)

गंगा किनारे लगे चमड़ा उद्योग या अन्य उद्योग गंगा को सबसे ज्यादा प्रदूषित कर रहे है।इसके निदान के लिए गंगा के किनारे से कम से कम पांच किलोमीटर दूर ले जाकर इनके कचरे को ये उद्योग स्वयं शोधित करे और उस शोधित जल को गंगा जी में न छोड़ें।

हिन्दू परंपरा में सनातन धर्म की अंत्येष्टि क्रिया परम्परा पर जो अधजली शवों को गंगा में विसर्जित करने की परम्परा है।वह गंगा में जलजीवों के अभाव के कारण जल को दूषित कर देती है। जिससे गंगा का वह औषधीय गुण विलुप्त होने के कगार पर है।इसके देवीय अद्भुत चमत्कारी गुणों के संवर्धन हेतु इस परम्परा पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की महती आवश्यकता है। जिससे गंगा अपने दैवीय गुणों से समृद्धशाली हो सके। प्राचीन हिन्दू परंपरा में गंगा के आचमन -पूजा की जो प्रविधि पुष्प पत्रों द्वारा अपनाई गई है। इसे और भी विकसित करने की आवश्यकता है। गंगा के दैवीय गुणों को पुनः वापस लाने के लिए जहां अंत्येष्टि कर्म में शवदाह, प्लास्टिक, कूड़ा, कचरा पर रोक

लगाना आवश्यक है।वही प्रकृति के नैसर्गिक पुष्प पत्रों द्वारा मां भगवती गंगा के अहर्निश पूजन-अर्चन की विशुद्ध परम्परा को संवृद्ध करने की नितांत आवश्यकता है। जिससे देवनदी मां गंगा अपने नैसर्गिक गुणों से सम्पन्न हो सके। प्राचीन और अर्वाचीन कवियों ने मां गंगा के विविध रुपों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। इनमें से कुछ यहां दृष्टांत स्वरुप प्रस्तुत है -

डॉ अजय जनमेजय द्वारा कुण्डलियाँ छन्द में गंगा मैया की महिमा का वर्णन किया है -

गंगा मैया है तुझे बारम्बार प्रणाम,
रहा सनातन मां सदा तेरा ऊंचा नाम।।
तेरा ऊंचा धाम कलुष को हरनेवाली,
मां तू है धन्यधान्य सभी को भरनेवाली।।
तेरे तट पर सब तीर्थ करे तन-मन को चंगा,
जल को निर्मल शुद्ध लिए बहती मां गंगा।।

रचनाकार सचिन्द्र भटनागर की कविता "मैं गंगा हूं" में इन्होंने गंगा के प्रदूषण का वर्णन करते हुए इसे पुनः शुद्ध बनाने का आह्वान किया है -

भक्तों तुमने निसिदिन पलछिन मेरी जय-जयकार की मैं गंगा हूं,
स्वर्गलोक की वासी थी मैं जनमंगल की प्यासी थी मैं मैंने दी सबको खुशहाली, धरती पर कर दी हरियाली लेकिन मेरी ममता मेहनत सब तुमने बेकार की मैं गंगा हूं
कूड़ा कचरा और रसायन, मुझमें फेंका गया प्रतिक्षण मीन मेरी मेरी गोदी में नीर बना विष धीरे धीरे, तुमने बहुत विषैली मेरी यह अमृत धार की मैं गंगा हूं।
नीर बँधा मेरा बाँधों में देश घिरा विपदाओं में, दिन दिन क्षीर हुई जाती मैं,अब श्रीहीन हुई जाती मैं, शुद्ध स्वार्थ मानवता में, तुमने सीमा पार की, मैं गंगा हूं।
आओ मां गंगा को स्वच्छ बनाओं,मत मुझमें गंदगी बहाओं, मैं बनकर निर्मल लहराऊं, पतित पावनी फिर बन जाऊं, बनूं पुनः मैं स्रोत पुण्य की,कारण सुख संचार की, मैं गंगा हूं।।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त विवेचन के द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि देवनदी मां गंगा को स्वच्छ रखने के लिए गंदे पानी का शोधन करके, औधोगिक कचरे पर सख्त प्रतिबंध, घाटों पर कचरा फेंकने पर रोक और पर्यावरण अनुकूल जैविक तरीके अपनाना अति आवश्यक है।
हिन्दू धर्म में विभिन्न कार्यक्रमों में आयोजित होने वाले त्यौहारों के दौरान नदी के पानी को जहरीला होने से बचाने के लिए मूर्तियों और पूजा सामग्री के विसर्जन पर उचित प्रतिबंध लगाना अति आवश्यक है।
भारतीय जनजागरुकता के आधार पर किसानों को रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की जगह जैविक खाद के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जिससे मिट्टी के साथ-साथ नदी का जल भी दूषित होने से पूर्णतः जागरुक होने की अति आवश्यकता है।

देवनदी मां गंगा पर विभिन्न उत्सवों पर कपड़े धोने, साबुन लगाने, प्लास्टिक पालीथीन पुष्प आदि फेंकने जैसे गतिविधियों पर रोक लगानी चाहिए। प्रत्येक जनमानस को श्रमामिगंगेश् जैसी सरकारी योजनाओं में जनभागीदारी सुनिश्चित कर लोगों को देव नदी मां गंगा के प्रति स्वच्छता रखने का विशेष महत्व अति आवश्यक है। जिससे मां भगवती गंगा का जल स्वच्छ और निर्मल होकर पुनः संचारित होने लगे।

हमारी भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक परम्परा गंगा को ब्रह्मस्वरूप मानती है। गंगा का जल ब्रह्मद्रव कहलाता है। अर्थात विश्व के जन कल्याण के लिए ब्रह्म ही मानो द्रवीभूत होकर सर्वजन सुलभ हो कर धरती पर बह रहा है। भगवती गंगा की यह आध्यात्मिक धारणा और इनका यह दैवी स्वरूप इतना प्रबल और गरिमाशाली है कि उसके आगे गंगा का भौतिक स्वरूप सरित्स्वरूप नास्ति स्वरूप हो गया है या ओझल हो गया है।
गंगा का विराट स्वरूप स्वाभाविक था जो साहित्य में भी प्रतिबिम्बित होता है। संस्कृत कवियों को गंगा के प्रति बड़ी ही आदरपूर्ण दृष्टि रही है और उन्होंने उसे मात्र एक नदी न मानकर दिव्य ब्रह्म स्वरूपिणी मातृशक्ति के रूप में स्थापित किया है।
संस्कृत साहित्य में प्राप्त भगवती गंगा की स्तुतियों में पंडितराज जगन्नाथ की गंगा लहरी अत्यंत प्रसिद्ध है। गंगा की ब्रह्मरूपता का वर्णन अपने ग्रंथ में इस प्रकार किया है कि

"न यत साक्षाद् वैदेरपि गलितभेदैरवसितं
न यस्मिञ्जीवानां प्रसरति मनोवागवसरः।
निराकारं नित्यं निजमहिमनिर्वासिततमो
विशुद्ध यत्तत्वं सुरतटिनीतत्वं न विषयरू।।"

अर्थात् हे देवी गंगा अभेद का प्रतिपादन करने वाले वेद भी जिस तत्व का साक्षात् रुप से पता भी नहीं लगा सके, जहां जीवों की वाणी तो क्या,मन भी नहीं पहुँचता, जो अपने प्रकाश से संसार के समस्त अज्ञान अंधकार का विनाश कर देता है। देवी तुम वही निराकार विशुद्ध दृष्टारुप ब्रह्मतत्त्व हो, इन्द्रियों का विषय कदापि नहीं।

ब्रह्मद्रव का तात्पर्य है कि तीनों से संतप्त होकर सांसारिक प्राणियों की दशा पर द्रवित होकर उसके ताप को शांत करने के लिए ब्रह्म का अर्थात् परमात्मा का जल रुप में अवतरित हो जाना।यह केवल शास्त्रीय अवधारणा नहीं है, अपितु प्रत्यक्ष गोचर अनुभवसिद्ध यथार्थ भी है। उक्त भाव से गंगा स्नान करने वाले मनीषियों आदि ने शान्ति का अनुभव किया है और आज भी यह किसी जा रहा है।यह प्रत्यक्ष अनुभव ऐसा है कि कोई भी कभी भी कर सकता है। तात्पर्य यह है कि

जैसे अंगूर का स्वाद अंगूर खाने से ही मिल सकता है, वैसे ही गंगा स्नान का फल भी गंगा स्नान से ही मिल सकता है कि -

गंगास्नानफलं ब्रह्मन गंगायामेव लभ्यते।
यथा द्राक्षाफलस्वादो द्राक्षायामेव मान्यताः।

स्कन्द पुराण काशी खण्ड २४/१०।

कवयित्री ने अपने महाकाव्य में श्री गंगा के पवित्र स्थल पर चतुर्दश प्रकार के कार्य नहीं करने चाहिए। जैसे - शौच, कुल्ला,बाल झाड़ना,निर्माल्य डालना,मैल छुड़ाना, शरीर मलना,दान लेना,हँसी मजाक करना, रतिक्रिया, दूसरे तीर्थ के प्रति अनुराग, दूसरे तीर्थ का महिमा गान,कपड़ा धोना,जल पीटना, तैरना ययह पुराणों का वचन है। इसे स्मरण करना चाहिए।

अतः चतुर्दशपापमपावनं त्रिपथगा-शुचिरोधसि वर्ज्यताम्।
स्मरत पद्मपुराण वंचारसि हो! विमलवारिमयी क्रियतां पुनः।।(७)

रक्षतगंगाम् (११/६)

उपसंहार-

आज हमारा यह राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम सब मिलकर मां भगवती गंगा को प्रदूषण मुक्त करें ताकि गंगा हमें शीतलता एवं पावनता प्रदान करती रहें। संस्कृत में एक वचन है कि -"धर्मो रक्षति रक्षित" अर्थात् आप धर्म की रक्षा करे, धर्म आपकी रक्षा करेगा। प्रकृति ने हमें गंगा को पवित्र रुप में दिया। यह विश्व में भारत के लिए प्रकृति की अनुपम देन है।हम सभी भारत वासियों का यह परम कर्तव्य है कि मां भगवती गंगा की पावनता को सुरक्षित रखें। मां भगवती गंगा का भी यह दर्द है कि मेरी पावनता को मानव ने ही नष्ट किया है। अतः जब तक मुझे मेरी पावनता प्राप्त नहीं होगी,मेरा दर्द दूर नहीं होगा। हमारे भारत देश की सारी सभ्यता एवं संस्कृति का विकास भी गंगा आदि नदियों के किनारे बसे शहरों में हुआ है। अतः मां भगवती गंगा जैसी नदियों की पावनता को सुरक्षित रखना हमारा नैतिक दायित्व है। अमृत स्वरुप मां भगवती गंगा जी का जल आज इतना प्रदूषित हो गया है कि गरीबी के कारण मानव अधजली लाश भी गंगा में प्रवाहित कर देते है। बाढ़ की मिट्टी बाढ़ के बाद पुनः भगवती मां गंगा में डाल देने के कारण मां भगवती गंगा दिन प्रतिदिन छिछली होती जा रही है। कहीं सरस्वती की ज्ञान धारा की तरह मां भगवती गंगा की ष्मोक्षधाराष् भी लुप्त न हो जाए।यह केवल भावुक मन की वेदना नहीं है।यह यथार्थ है,सत्य है, अनुभूति है और अवश्यंभावी है कि यदि हम नहीं सचेत हुए तो हमारी यह विरासत नष्ट हो जाएगी।

हम सब भारतवासी भगवान द्वारकाधीश एवं भगवान चन्द्रमौलिश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे हम सभी को ऐसी शक्ति प्रदान करें कि हम सब भारतवासी मां भगवती गंगा के आंचल को पुनः पवित्र बना सके ताकि मां भगवती गंगा अपना पूर्वरुप पुनः प्राप्त कर सके और हम सब मां भगवती गंगा के विषय में यह गायन कर सके कि -

"गांग वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम् त्रिपुरारी शिरश्चारी पापहारि पुनातु माम्।।"

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1.पाण्डेय, कमला, रक्षत गङ्गाम्, प्रथम संस्करण, श्रीमाता पब्लिकेशन्स, बी/4/60, हनुमानघाट, वाराणसी, 1999 ई. कृ श्लोक 11, 26 के संदर्भ उपलब्ध शोध-स्रोत में उद्धृत हैं।

2.वामनाचार्य, काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, सूत्र 1.2.6 - "रीतिरात्मा काव्यस्य"य गुण एवं रीति के सम्बन्ध के लिए 3.1.1 आदि। उपलब्ध संदर्भ-स्रोत में सूत्र 1.2.6 को स्पष्ट रूप से उद्धृत किया गया है।

3.मम्मटाचार्य, काव्यप्रकाश, अष्टम उल्लास, पृ. 416, विशेषतः 8-66-68 - माधुर्य, ओज एवं प्रसाद के त्रिविध गुण तथा माधुर्य का विवेचन।

4.मम्मटाचार्य, काव्यप्रकाश, अष्टम उल्लास, पृ. 430, 8-96 - माधुर्य सम्बन्धी विवेचन।

5.विश्वनाथ कविराज, साहित्यदर्पण, अष्टम परिच्छेद, पृ. 643, 8-1-2 - "माधुर्यमोजोऽथ प्रसाद इति ते त्रिधा" तथा माधुर्य का स्वरूप।

8.अरुण कुमार निषाद, "आधुनिक संस्कृत साहित्य में नवीन शब्द-प्रयोग", ज्ञदवूसमकहमंइसम त्मेमंतबीए टवस. 1, छव. 8, डंतबी 2023, पृ. 53- 'रक्षत गङ्गाम्' के प्रकाशन-विवरण तथा उसमें प्रयुक्त आधुनिक शब्दों का उल्लेख।

9.पाण्डेय, कमला, रक्षत गङ्गाम् के संबंध में लेखिका का आधिकारिक परिचय- कृति के 744 श्लोक एवं 11 सर्ग तथा उत्पत्ति, यात्रा, अध्यात्म, प्रदूषण एवं निवारण विषयों का विवरण।

10.रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास।

11. महाभारत, अनुशासनपर्व २६/२७।

12. महाभारत, वनपर्व अध्याय ८३वाँ श्लोक।

13. रामचरितमानस ७/१२७/५।

14.काशी निवासी अनुराग तिवारी -श्रीहरि..... नहीं रहेगी।

15.पद्मपुराण।